डॉ. समीर कुमार वर्मा (Feb 2021). भारतीय समाज पर सूफी एवं भक्ति आंदोलन का प्रभाव
International Journal of Economic Perspectives,*15*(2) 1-5
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

भारतीय समाज पर सूफी एवं भक्ति आंदोलन का प्रभाव

डॉ. समीर कुमार वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
सत्यवती कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार-
विविधता भारतीय समाज की विशेषता है। भारतीय समाज अनेक संस्कृतियों के सम्मिलन का केंद्र है। वर्तमान भारतीय समाज लंबी सांस्कृतिक विरासत का परिणाम है। प्राचीन काल में सिंधु सभ्यता से लेकर वर्तमान अधुनातन प्रवृत्तियों को समेटे हुए भारतीय समाज एक विशिष्ट सामाजिक परंपरा लिए हुए संपूर्ण विश्व में अपनी पहचान स्थापित किए हुए है। वर्तमान बहुलता आधारित भारतीय सामाजिक व्यवस्था पर मध्यकालीन सूफी एवं भक्ति आंदोलन का व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सूफी एवं भक्ति आंदोलन के परिणामस्वरुप ही सुधारवादी सहिष्णु भारतीय समाज का निर्माण संभव हो पाया है जिसने भारतीय नवजागरण के मार्ग को भी प्रशस्त किया।

बीज शब्द - *मध्यकाल, भक्ति, सूफी, समाज, आंदोलन, हिन्दू, इस्लाम, धर्म, भारतीय।*

भारतीय समाज दुनिया के सबसे विविध समाजों में एक है। इसमें कई धर्म , जाति, भाषा, नस्ल के लोग बिलकुल अलग-अलग तरह के भौगोलिक भू-भाग में रहते हैं। उनकी संस्कृतियां अलग हैं , लोक-व्यवहार अलग हैं। भारतीय समाज की यह विविधता महज कुछ दिनों का परिणाम नहीं है बल्कि इसकी एक लंबी ऐतिहासिक विरासत रही है। भारतीय समाज बहुलतावादी समाज है। इसमें भाषा , क्षेत्र, धर्म, जाति तथा रीति -रिवाजों की विभिन्नताएँ हैं। भारतीय समाज अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिये प्रसिद्ध है जोकि विभिन्न धर्मों के लोगों के कारण है। अपने हित और विश्वास के आधार पर विभिन्न जीवन-शैली को अलग-अलग संस्कृति के लोग बढ़ावा देते हैं। आज भारतीय समाज आधुनिकीकरण की तरफ बढ़ रहा है। आज के बहुलतावादी आधुनिकीकृत भारतीय समाज पर न सिर्फ ब्रिटिशकाल बल्कि सल्तनत एवं मुगलकाल के दौर में सूफी एवं भक्ति आंदोलन का व्यापक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। ब्रिटिश शासनकाल में परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रियाएँ प्रारंभ हुई। इनमें से कुछ पूरी तरह से बाह्य थीं, जबकि कुछ आंतरिक थीं। बाह्य प्रक्रियाओं में शामिल थे - पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, धर्मनिरपेक्षता, औद्योगीकरण इत्यादि , जबकि संस्कृतिकरण तथा नगरीकरण आंतरिक प्रक्रियाएँ थीं। आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण हमारे ब्रिटेन के साथ संबंधों का परिणाम था। उत्पादन में यांत्रिक तकनीक , व्यापार में बाज़ार पद्धति , परिवहन तथा संचार साधनों का विकास , नौकरशाही पर आधारित लोकसेवा की अवधारणा, औपचारिक तथा लिखित कानून, आधुनिक सैन्य संगठन, पृथक प्रशिक्षित विधिक पद्धति तथा आधुनिक औपचारिक शिक्षा पद्धति आदि महत्वपूर्ण कदम थे , जिन्होंने आधुनिकीकरण की पृष्ठभूमि तैयार की। लेकिन ब्रिटिशकाल के दौर की उपरोक्त विशेषताओं के आलोक में देखें तो सूफी एवं भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि भी कार्य करती दिखती है क्योंकि सूफी एवं भक्ति आंदोलन ने ही पश्चिम के पुनर्जागरण की तरह भारत में नवजागरण की आधार शिला रखी।

यदि हम भारतीय समाज पर सूफी एवं भक्ति आंदोलन के प्रभाव की बात करते हैं तो सर्वप्रथम इन आंदोलनों की पृष्ठभूमि, मान्यता एवं उद्देश्य का विश्लेषण करना जरूरी है।

मध्यकालीन आंदोलनों में सूफी मत का उल्लेख किए बिना मध्यकालीन भारतीय इतिहास के साथ न्याय नहीं किया जा सकता है। सूफी मत इस्लाम के रहस्यवादी , उदारवादी तथा समन्वयवादी दर्शन की संज्ञा है। सूफियों ने कुरान की रहस्यवादी एवं उदार व्याख्या की जिसे तरीकत कहा गया। सूफी आंदोलन का व्यवस्थित रूप अब्बासियों के खिलाफत

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 Sep 2020, Revised: 09 Oct 2020, Accepted: 18 Jan 2021, Published 28 Feb 2021

युग में दिखायी पङता है। एक धर्म के रूप में सूफी मत का विकास ईसा की नवीं शती में हुआ। सूफीवाद में संसार की सभी प्रमुख धार्मिक विचारधाराओं को सम्मिलित किया गया। इस्लाम धर्म के अलावा इस धर्म पर हिन्दू वेदांत , बौद्ध, यूनानी, ईसाई आदि मतों के सिद्धांतों का भी समावेश किया गया था। सूफी मत भी दार -उल-हर्बकोदार-उल-इस्लाम में बदलना चाहता था। सिर्फ अंतर इतना था , कि सूफी परिवर्तन के लिये शांतिपूर्ण एवं नैतिक साधनों का प्रयोग करना चाहते थे। सूफी संतों तथा फकीरों ने भी हिन्दू -मुस्लिम सामंजस्य स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रत्येक सूफी मान्यताकर को कुछ अवस्थाओं से गुजरना पड़ता था – उबूदियत, तरीकत (इश्क), मारिफात, हकीकत, फना (बका)। मुस्लिम रहस्यवाद का जन्म बहादातुलबुजूद (आत्मा-परमात्मा) की एकता के सिद्धांत से हुआ। इसमें हक को परमात्मा और खल्क को सृष्टि माना गया है। इस सिद्धांत के प्रतिपादक शेख मुहीउद्दीन इब्नुल अरबी थे।

फतुहात-ए-माक्किया ने इस विचार को इन शब्दों में व्यक्त किया – ईश्वर के सिवा कुछ नहीं है , ईश्वर के सिवा वहाँ किसी का अस्तित्व नहीं है, यहाँ तक कि वहाँ जैसा भी कुछ नहीं है, सभी चीजों का सार एक ही है। परमात्मा में लीन हो जाने के इस आदर्श को सूफी मारिफातयावस्ल कहते हैं। ईश्वर को निर्विकार एवं निर्विकल्प मानते हुये उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने पर उन्होंने बल दिया। यह प्रेम के द्वारा ही संभव है। अहंभाव की समाप्ति ही साधक की सफलता का रहस्य है। इस मत के अनुसार मनुष्य को अपनी इच्छाशक्ति का दमन कर अपने को पूर्णतया ईश्वर में समर्पित कर देना चाहिये। मनुष्य की इच्छायें जब समाप्त हो जाती हैं , तब वह ब्रह्म (अल्लाह) में मिल जाता है। इसे अन -अल्हक अर्थात्मैं ही ब्रह्म हूँ कहा गया है। यही सूफी दर्शन का चरम लक्ष्य है।

सूफी सृष्टि के प्रत्येक कण में ईश्वर के रहस्य को देखते थे। इसी कारण उन्होंने सभी जीवों के साथ प्रेम एवं दया करने का उपदेश दिया। सूफी मत में गुरू (पीर) का काफी महत्त्व था। शिष्य को मुरीद कहते थे। शिष्यता ग्रहण करते समय एक अनुष्ठान होता था , जिसे बैयत कहते थे। इसमें शिष्य अपना सिर मुंडवाते थे। यह भारतीय परंपरा के अनुकूल थी। इस अनुष्ठान में सूफी जमाल और हुस्न की बात करते थे। सूफियों ने भी मोक्ष की परिकल्पना की थी। मनुष्य के पार्थिव अस्तित्व के अंत को फना कहा गया है। जिसमें ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्थक हो जाने पर मनुष्य उसमें एकाकार हो जाता था। जब अस्तित्व अनन्तावस्था को प्राप्त कर लेता था, उसे वका कहते थे।

सूफियों के मुख्यतः दो उद्देश्य थे – आध्यात्मिक उन्नति और मानवता की सेवा। सूफियों ने अपने आदर्शों , शब्दों तथा आचरण से एक नैतिक मानक प्रस्तुत किया। उन्होंने अंध -विश्वास तथा धर्म और भक्ति के बीच के अंतर को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने उपदेश दिये तथा उसके अनुसार व्यवहार करने के आवश्यकता पर बल दिया। सूफीसंतों ने सूफी मत को आजीविका का साधन नहीं बनाया। उन्होंने जीविकोपार्जन के महत्त्व पर बल दिया। कुछ संतों ने अपने अहम को कुचलने के लिये भिक्षावृत्ति करना पसंद किया। इससे उन्होंने यह भी अनुभव किया , कि प्रत्येक वस्तु ईश्वर की है और व्यक्ति उसके अभिरक्षक मात्र होते हैं। आध्यात्मिक उपलब्धि के लिये ब्रह्मचर्य और संसार के पूर्ण त्याग पर उन्होंने जोर नहीं दिया। विवाह और गृहस्थ जीवन से उन्हें घृणा नहीं थी। विशिष्ट भौतिकतावादीदृष्टिकोण पसंद नहीं किया जाता था, लेकिन जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक माना जाता था। भारत में विशेषकर चिश्ती और सुहरावर्दी सिलसिलों के सूफियों ने ईश्वर के आराधना के रूप में समा और रक्स (संगीत और नृत्य) को अपनाया। उन्होंने किसी प्रकार के मनोरंजनपूर्ण संगीत का आश्रय नहीं लिया। मजलिस -ए-समा, मजलिस-ए-तराबया संगीतमय मनोरंजन से पूर्णतया भिन्न था सूफियों के लिये संगीत किसी लक्ष्य का एकमात्र साधन था। समा से उनकी आध्यात्मिक शक्ति सजीव हो उठती थी तथा उनके व ईश्वर के बीच का पर्दा उठ जाता था , जिससे उन्हें भावप्रवण तन्मयता की चरमावस्था प्राप्त करने में मदद मिलती थी।

भारत में सूफीवाद का प्रवेश अरबों की सिन्ध विजय के बाद हुआ। महमूद गजनवी के समय भारत में शेख अली हुज्वीरी आये, जिन्होंने लाहौर को अपना केन्द्र बनाया और कशफुलमजुब नामक ग्रंथ की रचना की। भारत में सूफियों के कई सम्प्रदाय थे और 16वीं सदी के उत्तरार्ध में अबुल -फजल ने 14 सिलसिलों का उल्लेख किया है। इनमें चिश्तिया , सुहरावर्दिया, नक्शबंदिया, कादिरी, कलंदरिया और शत्तारिया सम्प्रदाय महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हीं सम्प्रदायों को सिलसिला कहा जाता है। इनमें चिश्ती और सुहरावर्दी सिलसिले भारत में ज्यादा लोकप्रिय थे।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 Sep 2020, Revised: 09 Oct 2020, Accepted: 18 Jan 2021, Published 28 Feb 2021

चिश्ती सिलसिले की स्थापना खुरासान में अबू इशाक ने की थी। भारत में चिश्तिया संप्रदाय के प्रथम संत शेख उस्मान के शिष्य शेख मुईनुद्दीन चिश्ती थे और जनसाधारण इनको ख्वाजा के नाम से जानता था। ख्वाजा वेदान्त दर्शन व संगीत से काफी प्रभावित थे। हिन्दुओं के प्रति उदार दृष्टिकोण रखते थे। ख्वाजा का कहना था कि जब हम बाह्य बंधनों को पार कर जाते हैं और चारों ओर देखते हैं तो हमें प्रेमी -प्रेमिका और स्वयं प्रेम एक ही लगते हैं। अर्थात् एकेश्वर के समक्ष वे सभी एक है। इनके शिष्यों में शेख हमीउद्दीन और शेखबख्तियार काकी काफी लोकप्रिय थे। शेख हमीउद्दीन गैर मुसलमानों के अध्यात्मिक गुणों को भी पहचान लेते थे और उनकी कद्र करते थे। कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी का जन्म भारत में हुआ था। शेख कुतुबुद्दीन रहस्यवादी गीतों के बड़े प्रेमी थे। इनके शिष्यों में शेख फरीदुद्दीन मसूदगज -ए-शंकर अधिक प्रसिद्ध हैं। इन्हीं के प्रयासों से चिश्त्रिया सिलसिला एक अखिल रूप धारण किया। इनको जनसाधारण में शेख फरीद या बाबा फरीद के नाम से जाना गया। ये गुरुनानक से काफी प्रभावित थे।

शेख निजामुद्दीन औलिया ने अपने द्वार शिष्यों के लिये खोल दिये और उन्होंने अमीरों तथा सामान्य व्यक्तियों , धनी तथा निर्धनों, निरक्षरों, शहरियों और देहातियों, सैनिकों तथा योद्धाओं, स्वतंत्र व्यक्तियों तथा गुलामों को अंगीकार कर लिया था। निजामुद्दीन औलिया ने दिल्ली के सात सुल्तानों के राज्यकाल देखे। निजामुद्दीन औलिया के बाद शेख नासिरुद्दीन चिराग और सलीम चिश्ती ही प्रसिद्ध चिश्ती संत हुए। इनमें भी शेख चिराग को ही अखिल भारतीय प्रसिद्धि मिली। शेख चिराग को कुतुबुद्दीन मुबारक शाह तथा मुहम्मद बिन तुगलक के कारण कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। शेख सलीम चिश्ती को अकबर शेखू बाबा कहता था। चिश्ती सम्प्रदाय के गेसूद राज ने गुलबर्गा को केन्द्र बनाकर दक्कन में प्रचार किया।

चिश्ती सम्प्रदाय के संत सादगी और निर्धनता में आस्था रखते थे। वे व्यक्तिगत सम्पत्ति को अपने आध्यात्मिक जीवन के विकास में बाधक मानते थे। वे फुतूह तथा नजुर (बिना माँगे हुए प्राप्त धन और भेंट) पर अपना निर्वाह करते थे। कहा जाता है, कि शेख फरीदगज-ए-शंकर भूखों मरते थे, पर किसी से भोजन व धन नहीं माँगते थे। चिश्ती सूफी संत निम्न इच्छाओं के दमन के लिये उपवास किया करते थे। उनके वस्त्र भी निम्न स्तर के होते थे। अधिकांश सूफी संतों के गृहस्थ जीवन सुखमय होते थे, लेकिन निजामुद्दीन औलिया आजीवन अविवाहित रहे। चिश्तियों के सिद्धांत कुछ इस प्रकार थे-

कर्मकाण्डों का विरोध करना।
जनकल्याण पर पूरा ध्यान देना।
राजनीति से दूर रहना।
इस्लाम में पूर्ण आस्था रखते हुये सर्वधर्म समभाव पर समान रूप से बल देना।
निम्न वर्गों के प्रति ज्यादा सक्रियता।
संगीत समारोह का आयोजन करना तथा उनमें भाग लेना।

सुहरावर्दी सिलसिला भारत के उत्तर -पश्चिमी सीमा क्षेत्र में अधिक प्रभावित था। शेख शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी इस सम्प्रदाय के प्रणेता थे। उनके शिष्यों में शेख हमीदुद्दीन नागौरी और मुल्तान के शेख बहाउद्दीन विशेष प्रसिद्ध थे। भारत में इस सिलसिला द्वारा अपनायी गयी रीति -रिवाजों का त्याग कर दिया। जकरिया को धन इकट्ठा करने से नफरत थी। वे राजनीतिक मसलों में भी भाग लेते थे। बहाउद्दीन के पुत्र सहरुद्दीन आरिफ मुल्तान में तथा शिष्य सैयद जलालुद्दीन खुर्शबुखारी सिन्ध में सक्रिय थे। सुहरावर्दी सम्प्रदाय का सामाजिक आधार उच्चवर्ग था। ये सुहरावर्दी धर्मपरिवर्तन पर जोर देते थे। सुहरावर्दी सूफी सम्प्रदाय की एक प्रमुख शाखा फिरदौसिया थी। इसका मुख्य कार्यक्षेत्र बिहार था और शेख शर्फुद्दीन यह्या इसके प्रसिद्ध विद्वान थे। इन्होंने काफी पत्र छोड़े हैं , जिनको मक्तूबात के नाम से जाना जाता है। शेख शर्फुद्दीन विद्वान और विचारक होने के साथ-साथ सक्रिय पथ-प्रदर्शक भी थे और मानवता की सेवा पर जोर देते थे।

कादिरी सम्प्रदाय की स्थापना बगदाद के शेख अब्दुल कादिर जिलानी ने 12वीं सदी में की थी। भारत में इस सम्प्रदाय के पहले संत शाहनियामतउल्ला और नासिरुद्दीन महमूद जिलानी थे। शेख अब्दुल जाकिर फतेहपुर सिकरी के दीवान – ए–आम में नमाज पढते थे, जिस पर अकबर ने विरोध किया तो शेख ने उत्तर दिया – मेरे बादशाह, यह आपका साम्राज्य

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 Sep 2020, Revised: 09 Oct 2020, Accepted: 18 Jan 2021, Published 28 Feb 2021

नहीं है, कि आप आदेश दें। शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह कादिरी सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी बन गया था और मियां मीर से लाहौर में मुलाकात की थी। बाद में दाराशिकोह मुल्ला शाह बदख्शी का शिष्य बन गया।

शत्तारिया शाखा, कलन्दारिया शाखा और मदारिया शाखा का नाम लिया जाता है। शत्तारिया शाखा के प्रवर्त्तक शेख अब्दुल्ला शत्तार थे। इस शाखा के दूसरे संत शाह मुहम्मद गौस थे। इस शाखा के अंतिम संत शाह वजीउद्दीन थे। कलंदरिया शाखा के सर्वप्रथम संत अब्दुल अजीज मक्की को माना जाता है। इनके शिष्य खिज्र रूमी कलंदर खपरादरी थे। इनकी वजह से चिश्तिया -कलंदरिया उपशाखा का जन्म हुआ तथा सैय्यद नजमुद्दीन कलंदर ने इस शाखा का खूब प्रचार किया। इस शाखा के अंतिम महान संत कुतुबुद्दीन कलंदर हुए , जिन्हें सरंदाज की संज्ञा दी गयी थी। मुंडितकेश को इसी शाखा का संत माना जाता है। इसके अलावा मदारिया शाखा भी मिलती है , जिसके प्रवर्त्तक शेख बदीउद्दीन शाहमदार थे।

सिन्ध भी नव -सूफीवाद का महान केन्द्र था। यहाँ बहुत से सूफी संत पैदा हुये। रहस्यवाद की शुरुआत शाह करीम ने 1600 ई. में की, जिन्हें धार्मिक प्रेरणा अहमदाबाद के पास एक वैष्णव संत से मिली जिसने ॐ . के रहस्यों से उनका परिचय कराया। दूसरे उल्लेखनीय रहस्यवादी शाहइनायत थे , जिनका कहना था , कि ईश्वर किसी विशिष्ट सम्प्रदाय की सम्पत्ति नहीं है। सिन्ध के सूफी संतों में शाह लतीफ का स्थान सबसे ऊंचा है। वे महान कवि और गायक थे और उनके गीत अभी भी गाये जाते हैं। इसके अलावा आज भी सूफी रहस्यवादी कवियों बेदिल और बेकस के लिखे गये गीत सिन्धी समाज में लोकप्रिय हैं।

सूफी संत बुल्लेशाह सिन्ध के सबसे प्रिय कवि है। वे कुरान और अन्य सभी धर्मग्रंथों के भयंकर आलोचक थे। उनका कथन है, आपको ईश्वर न तो मस्जिद में, न ही काबा में, न कुरान और अन्य पवित्र ग्रंथों में, न ही औपचारिक प्रार्थनाओं में मिलेगा। बुल्ला तुम्हें मुक्ति न तो मक्का में, न ही गंगा में मिलेगी, तुम्हें मुक्ति केवल उसी समय मिलेगी जब तुम अपना अहंकार छोड़ दोगे।

यदि हम सूफी मत पर हिन्दू प्रभाव की बात करें तो अलबरूनी के अनुसार आत्मा के बारे में सूफी सिद्धांत पतंजलि के योगसूत्र के सिद्धांतों की ही भाँति है। सूफी रचनाओं में यह विचार अभिव्यक्त किया गया कि प्रति दान प्राप्त करने के उद्देश्य से शरीर आत्मा का मूर्त रूप होता है। अलबरूनी ने भी आत्माविनाश के रूप में दैवी प्रेम के सूफी सिद्धांत की पहचान भगवदगीता के समानान्तर अनुच्छेदों से की है। हठयोग की पुस्तक अमृतकांड का सूफी मत पर स्थायी प्रभाव पड़ा। यौगिक मुद्राएँ तथा प्राणायाम चिश्तियाँ सूफी पद्धति का एक अभिन्न अंग बन गया। मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी हिन्दी कविताओं मृगावती , मधुमालती, मानमात आदि में न केवल हिन्दू -देवताओं का उल्लेख किया है , बल्कि वेदांत दर्शन, योग, नाथ सम्प्रदाय के विचारधारा आदि का प्रभाव भी दिखाया गया है।

आमतौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि मध्ययुगीन काल के दौरान धार्मिक विकास की सबसे विशिष्ट विशेषता भक्ति आंदोलन था जिसमें ईश्वर के प्रति एकांगी गहन भक्ति पर जोर दिया गया था। यह अपने आपको भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण था। जिस आंदोलन ने मुख्य रूप से इन विचारों पर जोर दिया , वह था भक्ति आंदोलन - भगवान के प्रति समर्पण। भगवान को भक्ति को मोक्ष के रूप में स्वीकार किया गया था। भक्ति आंदोलन के प्रभाव को समझने की दृष्टि से, हमें उस पृष्ठभूमि पर विचार करना होगा जिसके तहत आंदोलन को गति मिली। मुस्लिम शासन के प्रभाव में , हिंदुओं ने नैतिक और आध्यात्मिक रूप से बहुत कुछ झेला था। सामान्य तौर पर मुस्लिम शासक हिंदुओं पर इस्लामी कानूनों को लागू करना चाहते थे। मुस्लिम शासन ने हिन्दू जनता के दिलों में खौफ पैदा कर दिया था। भक्ति आंदोलन से जुड़े संत चाहते थे कि उनके निराश दिलों को ठीक किया जाए। भक्ति आंदोलन ने उन्हें खुद को बचाने के लिए आशा और समर्थन और आंतरिक शक्ति प्रदान की। समय के दौरान , कई बुरी प्रथाएं हिंदू समाज में व्याप्त हो गईं। जाति और वर्गभेद बहुत था। कई विभाजन हुए थे।

भक्ति आंदोलन के संतों ने जाति और वर्ग के अंतर को खारिज कर दिया। एक महत्वपूर्ण कारक जिसने भक्ति आंदोलन की लोकप्रियता का कारण यह था कि इस आंदोलन के अधिकांश प्रवर्तकों ने राम और रहीम के एक होने पर जोर देकर

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 Sep 2020, Revised: 09 Oct 2020, Accepted: 18 Jan 2021, Published 28 Feb 2021

हिंदू और मुसलमानों के बीच के मतभेदों को समेटने का प्रयास किया। उन्होंने कट्टरपंडितों और मुल्लाओं की नफरत की एक जैसी निंदा की। हिंदुओं ने महसूस किया कि मुस्लिम शासकों और मुसलमानों को भारत से खदेड़ना मुश्किल था। दूसरी ओर मुसलमानों ने भी सराहना की कि हिंदू पूर्ण बहुमत में थे और उन सभी को इस्लाम अपनाने के लिए मजबूर करना असंभव था। इसलिए नए आंदोलन के प्रभाव में दोनों पक्षों ने एक दूसरे के करीब आने के लिए प्रयास करना शुरू कर दिया।

हिंदुओं के लिए भक्ति आंदोलन के हिंदू संतों और सूफी संतों द्वारा मुसलमानों के लिए प्रयास शुरू किया गया था। हिंदू और साथ ही मुस्लिम संतों ने धार्मिक सादगी पर जोर दिया। उन्होंने मानवीय गुणों और नैतिक दृष्टिकोण पर जोर दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि एक सच्चा धार्मिक व्यक्ति वह है जो विचार और कर्म में शुद्ध हो। भक्त संत पुरुष और मनुष्य की समानता में विश्वास करते थे। उनके अनुसार जन्म के आधार पर उच्च और निम्न का कोई भेद और विचार नहीं था। उनके दरवाजे सभी वर्गों के लिए खुले थे। भक्त संतों ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अच्छाई का माहौल बनाने की कोशिश की। भक्ति संत समाज सुधारक भी थे। उन्होंने कई सामाजिक बुराइयों की निंदा की।

भक्ति आंदोलन अपने दोतरफा उद्देश्य को साकार करने में बहुत हद तक सफल रहा , यानी हिंदू धर्म में सुधार और हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध विकसित करना। इसने एक नए संप्रदाय यानी सिख धर्म को जन्म दिया। यह कहना शायद दूर की बात है कि अकबर का व्यापक दृष्टिकोण भक्ति आंदोलन के प्रभाव के कारण था। आंदोलन ने हिंदू समाज को और विभाजित कर दिया। उदाहरण के लिए कबीर के अनुयायियों को कबीरपंथियों के रूप में जाना जाता है।

इस प्रकार से हम मध्यकालीन भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण करके यह जान सकते हैं कि सूफी और भक्ति आंदोलन ने मध्यकालीन भारतीय समाज को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया और भारतीय नवजागरण की नींव भी रखी।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

थापर, रोमिला (2018): भारत का इतिहास राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

शर्मा, रामकिशोर: कबीर ग्रंथावली, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

अहमद, लईक: मुग़लकालीन भारत, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

वर्मा, हरिश्चंद्र: मध्यकालीन भारत, खण्ड 1 और 2, हिंदी माध्यम कार्यांवय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

पांडे, विशम्भरनाथ: भारत और मानव संस्कृति, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।

मोहम्मद हबीब खलिक़ अहमद निज़ामी: दिल्ली सल्तनत-1,2 मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली।

चंद्र, विपिन: आधुनिक भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

बाशम, ए.एल. : अद्भुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।

दिनकर, रामधारीसिंह –संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 27 Sep 2020, Revised: 09 Oct 2020, Accepted: 18 Jan 2021, Published 28 Feb 2021